14 / 12 / 83 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

प्रभु परिवार - सर्वश्रेष्ठ परिवार

के महत्व का अनुभव

➢➢ मैं प्रभु रतन आत्मा

➳ _ ➳ अपने श्रेष्ठ भाग्य पर नाज कर रही हूँ

→ बाबा ने अपना बच्चा बनाकर

◆ कमलफूल समान बना दिया

• परिवार के प्यारे सम्बन्ध में ला दिया

➳ _ ➳ प्रभु परिवार में आकर सबकुछ बदल गया

→ लौकिक परिवार

◆ अलौकिक बन गया

→ कलियुग से निकल

◆ संगमयुग में आ गई

→ दु:ख के संसार से

◆ सुखों के संसार में आ गई

→ साधारण आत्मा से

◆ पुरूषोत्तम बन गई हूँ

→ धर्म, कर्म सब बदल गया

➳ _ ➳ कितने ऊँचे परिवार की अधिकारी हूँ

→ ऊँचे ते ऊँचे बाबा ने

→ ऊँचे ते ऊँचे ब्राहमण परिवार का

◆ सदस्य बनाकर

• भाई-बहन का पवित्र सम्बन्ध

• जुटा दिया

◆ वारिस बनाकर

• वर्से का अधिकारी बना दिया

➢➢ जो स्वप्न और संकल्पों में भी नहीं था

➳ _ ➳ उसको साकार रूप में अनुभव कर रही हूँ

→ स्वयं बाप साकार रूपधारी बन

◆ बाप और बच्चे का वा

◆ सर्व सम्बन्धों का अनुभव करा रहे हैं

• साकार रूप में प्रभु पालना दे रहे हैं

➳ _ ➳ प्रभु परिवार का बनकर

→ अलौकिक प्राप्तियों के

◆ झूले में झूल रही हूँ

→ सर्व प्राप्तियों के भण्डार

◆ भरपूर हो रहे हैं

➳ _ ➳ ऐसी मास्टर सर्वशक्तिवान बन गई हूँ

→ जो प्रकृति भी दासी बन सेवा कर रही है

◆ प्रभु परिवार को श्रेष्ठ समझ

◆ जन्म-जन्मान्तर के लिए

• पंखा झुला रही है

→ माया के वार से परे हो गई हूँ

➢➢ मैं प्रभु परिवार के महत्व को जान गई हूँ

➳ _ ➳ महिमा को पहचान गई हूँ

→ ऐसे परिवार की सदस्य हूँ जिसका

→ अभी भी गायन और पूजन हो रहा है

◆ चरित्रों का यादगार शास्त्र- 'भागवत'

• अभी तक प्यार से सुनते और सुनाते रहते हैं

◆ पढ़ाई का यादगार शास्त्र -'गीता'

• कितनी पवित्रता से विधिपूर्वक सुनते और सुनाते हैं

◆ प्रभु परिवार का यादगार

◆ आकाश सूर्य, चन्द्रमा और लकी सितारों के रूप में

• मनाते और पूजते रहते हैं

➢➢ प्रभु परिवार में आकर

➳ _ ➳ मैं आत्मा बाप की

→ दिलतख्तनशीन बन रही हूँ

➳ _ ➳ स्वराज्य अधिकारी बन रही हूँ

→ बापदादा स्वराज्य का तिलक दे रहे हैं

◆ राज्य तिलक दिवस मना रही हूँ

◆ तिलक लगाकर

• खुशी मिल गई है

• श्रेष्ठ भाग्य मिल गया है

• सारे संकट दूर हो गए हैं

➳ _ ➳ अभी नहीं तो भविष्य प्रालब्ध भी नहीं

→ इसी पाठ को पक्का कर

- तिलकधारी
- तख्तधारी
- विश्वकल्याण की ताजधारी
  - बन रही हूँ

➳ _ ➳ सर्व प्राप्तियों का जीवन ही -'ईश्वरीय परिवार' है

→ सदा इसी नशे और ख़ुशी में रह

→ अनेक हद के चक्करों से छूटकर

- 'स्वदर्शन चक्रधारी'
  - बन रही हूँ